(5)

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

Answer sheet

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

2020-21

ऐनरोलमेन्ट नंबर ______ अभ्यास-5 शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	नौकुवाय
(२)	निपध
(३)	लोभ
(४)	प्रत्याख्यानि
(५)	नगर की अग्नि
(६)	गजदंतगिरी
(७)	सुधर्मास्वामीजी (अन्हे)
(८)	अनंतानुबंधी माया
(९)	शरणरूप
(१०)	उत्सूत्र प्ररूपणा
(११)	अर्जुन (श्वेत)
(१२)	प्रशांत मुद्रा
(१३)	अरति / अप्रीति
(१४)	नित्य कर्तव्य
(१५)	कोल्लागसन्निवेश
(१६)	संज्वलन क्रोध
(१७)	उर्ध्वगोपुच्छ
(१८)	उर्ध्वगति
(१९)	गंधापाती
(२०)	द्वादशांगी

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	महाविदेह क्षेत्र
(२)	स्मृति अंतर्धान
(३)	नीलवंत पर्वत
(४)	श्री धाम्मिल
(५)	जिनपूजा
(६)	शांतिजिन
(७)	असंतोषी
(८)	नैवेद्यपूजा
(९)	स्वप्न
(१०)	सर्व-विरति
(११)	व्यक्तकुमार
(१२)	माया
(१३)	नालियरद्वीप
(१४)	दुःखदायी
(१५)	अप्रत्याख्यानी माया
(५)	धन्य
(६)	भावित क्रिये
(७)	चारित्र
(८)	आरोग्यवाला
(९)	ज्यादा
(१०)	कील (कुदुम)
(११)	नविन शरद ऋतु
(१२)	हल्दी
(१३)	सेतु
(१४)	देवगति
(१५)	पहले
(१६)	मुख्यवाले
(१७)	संसार
(१८)	धूल
(१९)	विधि
(२०)	घातक

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	निचगोत्र
(२)	यथाख्यात
(३)	आपो
(४)	सत्व मे

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	७	(६)	१
(२)	९	(७)	५
(३)	८	(८)	४
(४)	३	(९)	६
(५)	१०	(१०)	२

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	५० वर्ष
(२)	२५
(३)	३
(४)	४८
(५)	५० वर्ष
(६)	१७
(७)	२५० योजन
(८)	६४
(९)	२०-१००
(१०)	१ वर्ष / ३६०

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	२२
(२)	✓	(२)	७
(३)	✓	(३)	१८
(४)	✓	(४)	४
(५)	×	(५)	१५
(६)	✓	(६)	११
(७)	✓	(७)	५
(८)	×	(८)	२१
(९)	✓	(९)	१५
(१०)	×	(१०)	९

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. लोभ मानव को असंतोषी बनाता है। असंतोष मानव को अनेक दिशाओं में द्रव्य संचय करने के निमित्त से अनियमीत रूप से परिभ्रमण करता है। धर्म के लिये अनुकूल देश एवं उत्तम धार्मिक मनुष्यों का सहवास अपेक्षित होता है। ऐसी परिस्थिती न होने पर मानव धर्म से भ्रष्ट होता है। जिनकी दृष्टि सत्य, आत्मा की ओर घूमी हुई है, ऐसे धर्मात्मा जीवों को तो लोभ को काबु में लाने के लिए इस व्रत का खास पालन करने की आवश्यकता है। यह बाह्य दिशा प्रमाण के द्वारा मन को पूरी दुनिया के विषयों में भटकने से अटकाकर, अपने स्वरूप में लाकर रखने की आंतर सूचना करने में आयी है, यह इस व्रत का गुप्त रहस्य है।

२. इन चारों कषायों का काल क्रमशः यावज्जीवन, एक वर्ष, चार मास और पंद्रह दिन है। क्रमशः नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्य गति और देवगति देनेवाले है तथा क्रमशः सम्यक्त्व, देशविरती, सर्वविरती और यथाख्यात चारित्र के घातक है। इस गाथा में कषायों की काल प्रमाणता, गतिदायकता और गुणघातकता बताई गई है।

३. वृत्त वैताढ्य ००४, दीर्घ वैताढ्य पर्वत ०३४, वक्षस्कार पर्वत -०१६, चित्र-विचित्र पर्वत -००२, यमक-समक पर्वत - ००२ कंचनगिरि पर्वत -२०० गजदन्तगीरी पर्वत -००४, मेरु पर्वत - ००१, वर्षधर पर्वत -००६ कुल २६९ पर्वत जंबूद्वीप में है। वृत्त वैताढ्य पर्वत → इन चार पर्वतों का आकार गोल प्याले जैसा है। ये पर्वत १००० योजन ऊंचे और मूल में तथा मध्य एवं ऊपर भी १००० योजनवाले हैं। हिमवंत क्षेत्र के मध्य में रहे हुए वृत्त वैताढ्य का नाम शब्दापाती है, हिरण्यवंत क्षेत्र के मध्य में रहे हुए वृत्त वैताढ्य का नाम विकटपाती है। हरिवर्ष क्षेत्र के मध्य में रहे हुए वृत्त वैताढ्य का नाम गंधापाती है। रम्यक क्षेत्र के मध्य में रहे हुए वृत्त वैताढ्य का नाम माल्यवंत है।

४. व्यक्त और सुधर्मा स्वामी का जन्म मगध देश के समीप में कोल्लाग सन्निवेश गांव में हुआ। उनकी दोनों की जाति ब्राह्मण थी। दोनों भी वेद वेदान्त में पारंगत थे। दोनों ही अध्यापक के रूप में प्रसिद्ध थे। उनका शिष्य परिवार ५०० -५०० का था। दोनोंने ५० वर्ष की उम्र में दिक्षा ग्रहण की थी। व्यक्त स्वामी का आयुष्य ८० वर्ष का था एवं सुधर्मा स्वामी का आयुष्य १०० वर्ष का था। व्यक्तस्वामी के बाद कोई शीष्य परंपरा नही चली। गणधरों में बहुत लंबी और आजदिन तक सुधर्मास्वामी की शिष्य परंपरा चली है। व्यक्त स्वामी का केवलीपर्याय १२ वर्ष का था। और सुधर्मा स्वामी का केवलीपर्याय ८ वर्ष का था। अभी प्रचलित द्वादशांगी सुधर्मस्वामी की ही है। और सर्व साधु-साध्वी उनकी ही शिष्य परंपरा है।

५. जिनपूजा के लिए पवित्र स्थान पर रखे हुए साफ केशर, कपूर, बरास, जातिवंत चंदन, धूप, गाय के घी का दिपक अखंड अक्षत, तभी बनाये हुए, चुहे-बिल्ली आदि हिंसक जीवोंने न सुंघे हुए, न स्पर्शे हुए और न झुठलाये हुए ऐसे पकवान प्रमुख नैवेद्य और ताजे मनोहर सुस्वादिष्ट मनभावक सचित -अचित फल वापरना चाहिये। ये शुद्धियाँ (वस्तु एवं उपकरण शुद्धि) और उनके साथ-साथ श्रावक के मन की शुद्धि, वचन की शुद्धि, वचन की शुद्धि, काया की शुद्धि, भूमि की शुद्धि एवं भावों की शुद्धि आदि सात शुद्धियां जिनालय में प्रवेश करते हुए रखनी चाहिये। जिनपूजा में शुद्धि और विधि का पालन अत्यंत आवश्यक है। जिनपूजा करते हुए मौन रहना चाहिये। प्रभु पूजा के समय शारिरीक शुद्धी एवं उपयोग में ली गयी प्रत्येक सामग्री की शुद्धि रखने में सावधानी रखना चाहिये।